॥ अनुक्रमणिका ॥

<u>विषय</u> पृष्ठ सं.

॥ अध्याय - पंचम ॥

1.	शिवभक्त यातायात के नियम	87
2.	काम (सेक्स)- एक क्षणिक शारीरिक सुख	88
3.	साधु योनि	89
4	धन का अहंकार	90
5	स्वंय का शत्रु -आलस	91
6	दैवीय सम्पदा -क्षमा	93
7	आधी विपत्तियों का निवारण - धैर्य	94
8	खुशी एक फूल है।	95
9	शिव - शिवा स्तुति	96
10	रिश्वत - एक पाप कर्म	98
11	स्वंय का शत्रु - क्रोध	99
12	शिवलिंग	100
13	प्रभु को न जाने दे ...	101

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II

॥ शिवभक्त यातायात के नियम ॥

कल मनुष्य पैदल चलते थे, आज गाड़ी से चलते है। आने वाले कल में मनुष्य पंख लगाकर आकाश में उड़ेगें। पैदल चलने वालों के लिए फुटपाथ बनाये। हार्न पर हाथ रखकर चलने वालों को दंडित करे। सडकों पर कैमरा लगाये। भीड़ - भाड़ वाले इलाकों में चार पहिया एवं उससे बड़ी गाडी जाने पर कर लगाये। 20 तक की स्पीड से चलने वाले मोटर सायकिल पर हेलमेट और चार पहिया गाड़ी पर सीट बेल्ट की अनिवार्यता न करे। इससे दुष्ट जन भी हेलमेट पहनकर गलत कार्य कर जाते है।

कल गाड़ी की स्पीड थी अधिकतम 40, आज न्यूनतम 40 और कल बिना लिमिट की स्पीड होगी। गाड़ी में जल्दी चलने वालों के लिए इमरजेंसी हार्न लगाये। डीपर लाइट को हटा दे। ट्रैफिक नियम तोड़ने वाले का ड्राइविंग लाइसेंस एक माह तक जब्त कर दे। नोटिस द्वारा जुर्माना लगाये। विपरीत दिशा से आने वाली गाड़ी को दंडित करे। चौराहे पर ही गाड़ी को मोड़े।

मालगाड़ी , सवारी गाड़ी , बुलेट ट्रेन के लिए 6 अलग-अलग रेल लाइने बनाये। रेलवे स्टेशन पर प्लेटफार्म और ट्रेन के बीच क्रांसिग बनाये। 100 किमी तक महानगरो में लोकल ट्रेन चलाये।

पब्लिक अपनी पहचान पत्र और उसका फोटो कापी साथ रखे। नो इण्ट्री में घुसने पर पहचान पत्र जब्त करे। सुविधा शुल्क लेकर लोगों की जान से खिलवाड़ न करे।

आने वाले समय में हवाई जहाज की स्पीड राकेट की तरह हो जायेगी। स्कूल ,कालेज में 'शिवभक्त यातायात के नियम 'का पाठ पढ़ाये। एक माह के प्रशिंक्षण के बाद ही ड्राइविंग लाइसेंस जारी करे।

आने वाले समय में मोटर सायकिल भी जल पर चलेगी और आकाश में उड़ेगी। पब्लिक अपने जान की सुरक्षा के लिए यातायात के नियम को माने नहीं तो मनुष्य आज के कुत्तों की भाँति सड़कों पर कुचले जायेंगे। जो कुत्तों को कुचलते है ,वे भी एक दिन कुत्तों की तरह ही सड़कों पर कुचले जायेगे।

माता - पिता अपने बच्चों को ट्रैफिक के नियम बताये।

॥ SHIVBHAKTI MAHAPURAN ॥

कल सड़क पर सेक्स होगा क्योंकि सभी काम आज सड़क पर ही हो रहा हैं। कल बायें चलने का नियम था। आज लोग दायें चल रहे है और आने वाले समय में सड़क के बीचों - बीच चलेंगे। गाड़ी चलाते समय मोबाइल फोन का प्रयोग न करे। गाड़ी साइड कर के ही संक्षिप्त में बातें करे।

जान आपकी है। सुरक्षा भी आपको ही करनी होगी। पैदल यात्रियों का सम्मान करे। उनके पास साधन नहीं रहता उन्हें ज्यादा जल्दी रहती है। गाड़ी चलाते समय नशा का प्रयोग न करे। नींद में गाड़ी न चलाये। सोचते हुए गाड़ी न चलाये। बार - बार हार्न का प्रयोग करना , अपने गुस्से का इजहार प्रकट करना ही है। कम दूरी के लिए पैदल ,सायकिल का प्रयोग करे न कि चार पहिया वाहनों का।

अपनी जान बचाना है।

तो ट्रैफिक नियम अपनाना है॥

॥ काम (सेक्स)- एक क्षणिक शारीरिक सुख ॥

काम शब्द भगवान कामदेव से आया है। काम एक क्षणिक शारीरिक सुख है। काम आँखों या कानों के माध्यम से मन को विचलित करता है। प्रातः संध्या एवं सायं संध्या के समय काम अपने चरम पर होता है।

नारी में जब मातृभाव अहियै।

तभी काम से पीछा छुटिहै॥

काम में समय का बहुत महत्व होता है। जब भगवान शिव ने माँ पार्वती से विवाह किया था ,उसी दिन से काम जीवित हो गया है और लोगों पर अपनी गहरी असर छोड़ता जा रहा है। हर इंसान पर काम का प्रभाव पडता है।

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II

कामदेव पर विजय पाने वाले शंकर जी ही है। काम से मुक्ति के लिए परमर्षि सनत्कुमार का नाम ले। अथवा शिवभक्त का सुरक्षा कवच धारण करे। काम की कोई सीमा नही है जितना आग में घी डाला जाएगा ,उतनी ही आग शान्त नहीं बल्कि प्रज्जवलित ही होगी। क्या देवताओं ने भी अपनी पत्नी को पूर्णतया संतुष्ट किया है ?

लिंग से योनि का स्पर्श होना ही सेक्स है। नारियाँ भी अपने अंतरंग को खुला न छोड़े। अपने पति के अलावा किसी अन्य पुरूष को आकर्षित न करे। आज सत्यपुरूष वही है जो नारी के नग्न रहने पर भी खुद विचलित न हो। काम प्रवृत्ति असुर स्वभाव हैं। काम को मन से नियंत्रित करे।

मन प्रभु के ज्ञान और ध्यान में लगाये। इससे काम से मुक्ति अवश्य मिलेगी। कामी पुरूष को स्वर्ग भी नसीब नही होता। काम मन का एक दोष है , शत्रु है और कुछ नहीं। काम 14 वर्ष के ऊपर के मनुष्यों को ही प्रेरित करता है उससे कम उम्र के पुरूषों को नहीं। कभी - कभार यह नियम कम उम्र के मनुष्यों पर भी लागू हो जाता है।

जैसे - जैसे समय बढ़ता जाएगा वैसे - वैसे काम कम उम्र के लोगों को भी ग्रसित करता जाएगा। स्त्री से प्रजनन करना ,बच्चे उत्पन्न करना भी काम के लिए नहीं बल्कि धर्म की वृद्धि के लिए ही हैं।

चार धाम नहीं घर ही धर्म , अर्थ काम और मोक्ष का साधन है। स्त्री और धन का अपहरण करने से न तो स्त्री और न तो धन ही एक जगह टिकते है। वे एक जगह से दूसरी , दूसरी जगह से तीसरे जगह बदलते जाते हैं। आजकल प्रेम भी सेक्स के लिए किया जाता है। प्रेम में स्त्री का शील भंग कर नरक में प्रवेश न करे।

मन से प्रभु की भक्ति।

कामदेव से मुक्ति ॥

॥ साधु योनि ॥

मनुष्य का पुण्य जब अधिक हो जाता है , तो उसे साधु योनि की प्राप्ति होती है। साधु योनि ही एकमात्र ऐसी योनि है जिसमें अन्य लोकों को बिना पार किये सीधे - सीधे परमात्मा का निवास उपलब्ध हो जाता है। मनुंष्य योनि के बाद साधु योनि ही आता है। इस योनि में समस्त साधु व साध्वी मन ही मन 'ओम् ' का जप करते रहते है। वाह्य पूजन में ये सिर्फ शिवलिंग का पूजन करते है। पत्तल पर भोजन करना ,चटाई पर सोना , कुटिया में निवास करना इनका स्वभाव है।

जिस देश में अथवा स्थान में साधु - संतों, फकीरों , ऋषि - मुनियों , साध्वीयों का निवास नहीं , वह स्थान कभी पवित्र नहीं हो सकता। संत पुरूष ही वास्तव में तीर्थ और देवता है।

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II

॥ बाबा भतृहरि की समाधि, चुनार का किला, भारत ॥

साधु - संतों को मठ बनाना ही नहीं चाहिए। साधु का मुख्य धर्म है - शांति और अहिंसा। गृहस्थों के लिए स्वाभाविक होने के कारण अपनी पत्नी का संग पाप नहीं है परन्तु संन्यासी के लिए घोर पाप है। सात्त्विक कर्म करने से ऋषिलोक अथवा साधु योनि मिलती है। साधु जनों का मार्ग अस्पष्ट रहता है। भगवान शंकर तक केवल सत्य - पुरूषों की ही पहुँच है।

वशिष्ठ ,सप्तर्षि , भृगु ,अंगिरा , दधीचि , अगस्तस्य मुनि , विश्वामित्र आदि मुनि सर्वश्रेष्ठ मुनियों मे से एक है। आज की माँ तो यह हरगिज नहीं चाहती कि मेरा बेटा साधु बने।

असाधु कभी साधुता को और साधु कभी असाधुता को नहीं ग्रहण करता है। यह जरूरी नही है कि जो मनुष्य सब कुछ छोड़कर शांति अथवा परमात्मा की खोज में जंगल - जंगल घूमे , वही साधु है। साधु की तो एक दृढ़ प्रतिज्ञा होती है कि चाहे मेरा सर कलम हो जाए ,चाहे मुझे मृत्यु ही क्यूँ न आ जाय लेकिन बिना भगवान शिव के पूजन किये मैं अन्न ग्रहण नहीं करूँगा। ऐसी प्रतिज्ञा घर में करने वाला एक गृहस्थ भी करता है और पालन करता है तो वह गृहस्थ भी घर में होते हुए साधु ही है। भगवान शिव तो साधुओं के साधु महान साधु महायोगी है। अगर भगवान शिव को प्रत्यक्ष देखना है तो सात्त्विक कर्म करते - करते साधु योनि में प्रवेश करे। सच्चा साधु वही है जिसका काम ,क्रोध ,मोह और लोभ से तृप्ति हो चुकी हो।

॥ धन का अहंकार ॥

जिस प्रकार पशुओं को ठीक करने के लिए डंडे का प्रयोग आवश्यक है, ठीक उसी प्रकार अहंकारी धनी व्यक्तियों के दमन करने का,रास्ते पर लाने का उपाय समझाना - बुझाना नहीं बल्कि दण्ड देना है। जब परमेश्वर किसी पर कृपा करते है, उसका धन छीन लिया करते है क्योंकि जब मनुष्य धन के मद से मतवाला हो जाता है, तब वह परमेश्वर का और लोगों का तिरस्कार करने लगता है। जो मूर्ख राजा या मंत्री अपनी राजलक्ष्मी के घमंड से अंधे होकर गरीबों का धन हड़पना चाहते है, समझना चाहिए कि वे जान - बूझकर नरक में जाने का रास्ता साफ कर रहे है।

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II

धन - वैभव के लोभ में पड़कर मनुष्य घोर नरक में जाता है, वह केवल चार दिन की चाँदनी है। उसका दीपक तो बुझा - बुझाया है। मनुष्यों को धन अत्यन्त प्रिय लगता है। उन्हें इकट्ठा करना ही उसके दुःख का कारण है। जिसके चित्त में असंतोष है, वही दरिद्र है।

धन अनर्थों के धाम है। धन के अत्यन्त लोभी अर्थपिशाची है। फिजूलखर्ची करने वाले शैतान के भाई होते है। प्रायः धनी व्यक्ति परमेश्वर से प्रेम नहीं करते है।

अन्याय से अपहरण किये हुए धन और स्त्री को दूसरा व्यक्ति छीन लेता है फिर तीसरा व्यक्ति झटक लेता है। इस प्रकार वे एक पुरूष से दूसरे पुरूष के पास जाते रहते है , एक स्थान पर नहीं ठहरते। धन का अहंकारी व्यक्ति अपनी बेइमानी के कारण दूसरे व्यक्ति का बैरी बन जाता है।

यदि किसी कंगाल को बड़ी कठिनाई से कुछ धन मिल जाता है तो उसमें उसकी आसक्ति हो जाती है। जिसे चोर, सेवक और व्यापारी अपने अत्यन्त प्यारे प्राणों की भी बाजी लगाकर संग्रह करते है। उस धन की तृष्णा को भला कौन त्याग सकता है। तृष्णा का सर्वथा त्याग कर देना चाहिए। भला ये संसार की सम्पत्तियाँ किसकी है ? धन , स्त्री , पशु , पुत्र , पुत्री , महल , पृथ्वी , हाथी , खजाना और भाँति - भाँति की विभूतियाँ - और तो संसार का धन तथा भोग सामग्रियाँ इस क्षण - भंगुर मनुष्य को क्या सुख दे सकती है । वे स्वंय ही क्षण - भंगुर है।

धन के लोभी धनियों का दुःख तो देखा जा सकता है। भय के मारे उन्हें नींद नहीं आती। सब पर उनका संदेह बना रहता है। मनुष्यों का अधिकार केवल उतने ही धन पर है , जितने से उनकी भूख मिट जाय। इससे अधिक सम्पत्ति को जो अपनी मानता है वह चोर है, उसे दण्ड मिलना चाहिए।

लक्ष्मी जी जिसे उपेक्षित कर देती है वे लोग निर्बल , निर्लज्ज और लोभी हो जाते है।

किसी भी वस्तु के लिए कभी लोभ नही करना चाहिए। धर्मात्मा पुरूष निर्धन होने पर भी धर्म के लिए अथवा शरीर निर्वाह के लिए धन प्राप्त करने की चेष्टा न करे क्योंकि जैसे बिना किसी प्रकार की चेष्टा किये अजगर की जीविका चलती है , वैसे ही निवृत्ति परायण पुरूष की निवृत्ति ही उसकी जीविका का निर्वाह कर देती है।

धन स्वंय एक दोष है। धनी पुरूष में 3 दोष होते है - धन , धन का अभिमान और धन की तृष्णा। दरिद्र पुरूष में पहले दो नहीं होते , केवल तीसरा दोष होता है। दरिद्र पुरूष में घमंड और हेकड़ी नहीं होती। वह सब तरह के मदों से बचा रहता है। बल्कि दैववश उसे जो कष्ट उठाना पड़ता है , वह उसके लिए एक बहुत बड़ी तपस्या भी है। एक दरिद्र पुरूष यह देख सकता है कि दूसरे प्राणी भी मेरे ही जैसे है।

धन को अर्थ कहते है। अर्थ को अनर्थ समझकर इसे संग्रह करने का प्रयास नहीं करना चाहिए। भूख और प्यास मिट जाने पर खाने - पीने की कामना का अंत हो जाता है।परन्तु यदि मनुष्य पृथ्वी के समस्त धन को जीत ले , भोग ले, तब भी लोभ का अंत नहीं होता। भोजन का मिलना और न मिलना प्रारब्ध के अधीन है । भगवान शिव तो सब कुछ त्यागकर प्रसन्न रहते है। धन तो दुःख का कारण है। करोड़ों, अरबों रूपये जुटाने वाले धनी व्यक्ति के पास वह खुशियाँ नहीं रहती जो खुशियाँ एक गरीब व्यक्ति के पास होती है क्योंकि गरीब , अनाथ और विधवा के हृदय में परमेश्वर अनिवार्य रूप से मौजूद रहते है।

I SHIVBHAKTI MAHAPURAN I

लोभ नरक का द्वार है।

बहुतेरे लोग जाने को तैयार है॥

॥ स्वंय का शत्रु - आलस ॥

थोड़ी देर तक सोना, थोड़ी देर झपकी लेना और हाथ - पर- हाथ रखकर थोड़ी देर आराम करना ही आलस है। आलस होने पर गरीबी तुम पर डाकू की तरह टूटेगी, अभाव तुम पर बलशाली की तरह आक्रमण करेगा।

आलसी ! तुम कब तक पड़े रहोगे , तुम अपनी नींद से कब जागोगे ? आलसी हाथ गरीब और परिश्रमी हाथ अमीर बनाते है। जो मनुष्य उपयुक्त समय पर रसद एकत्र करता , वह बुद्धिमान है। जो फसल के समय सोता रहता है, वह घृणित है।

मनुष्य जिस तरह अपने हाथ से परिश्रम का फल पाता है उसी तरह उसे अपने शब्दों के फल से अच्छी चीजें प्राप्त होती है। परिश्रमी शासक बनेगा, लेकिन आलसी व्यक्ति को बेगार में लगाया जायेगा। आलसी की आशा व्यर्थ है, किन्तु परिश्रमी की इच्छा पूरी होती है। आलसी का पथ काँटों से भरा होता है। मजदूर की भूख उससे काम कराती है, उसका खाली पेट उसे विवश करता है। जो काम में ढिलाई करता है, वह काम बिगाड़ने वाले का भाई है।

आलस्य मनुष्य को गहरी नींद में सुलाता है। आलसी का पेट भूखा रहता है। आलसी व्यक्ति थाली में हाथ डालता तो है, किन्तु वह उसे उठाकर मुँह तक नहीं ले जाता। आलसी कार्तिक में हल नहीं चलाता, किन्तु फसल के समय ढूँढने पर भी उसे कुछ नहीं मिलेगा।

नींद को प्यार मत करो, नहीं तो दरिद्र बनोगे।

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II

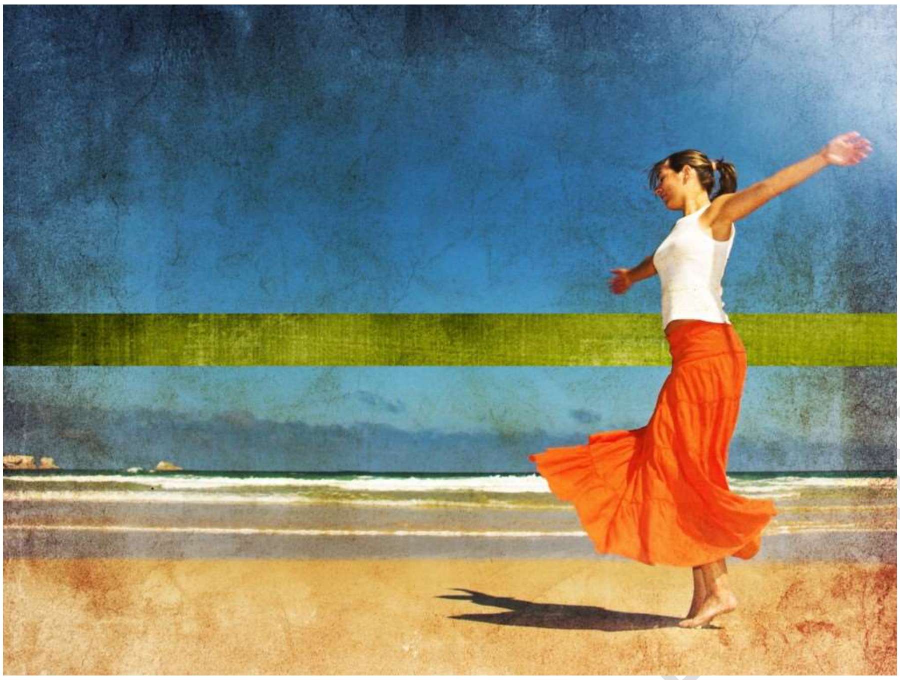

आँखे खुली रखो और तुमको रोटी की कमी नहीं होगी। जो परिश्रम करता है , उसकी योजनाएँ सफल हो जाती है और जो उतावली करता है, वह दरिद्र हो जाता है। आलसी का लालच उसे मारेगा क्योंकि उसके हाथ काम करना नहीं चाहते। वह दिन भर लालच के जाल में फँसा रहता है।आलसी कहता है, '' सिंह बाहर खड़ा है, सड़क पर निकलने पर वह मेरा वध करेगा।'' जिस तरह किवाड़ अपने कब्जे पर घूमता, उसी तरह आलसी अपने पलंग पर करवट बदलता है।

मैं आलसी के खेत के सामने से निकला , उस मनुष्य की दाखबारी के सामने से , जो मूर्ख है। मैंने देखा कि काँटे सब जगह पर उग गये, भूमि जंगली पौधे से ढकी है और पत्थरों की दिवार गिर गयी है। मैंने जो देखा , उस पर विचार किया और उससे यह शिक्षा मिली कि -

थोड़ी देर तक सोना, थोड़ी देर तक झपकी लेना और हाथ - पर - हाथ रखकर थोड़ी देर तक आराम करना - ऐसा होने पर दरिद्रता टहलते हुए तुम्हारे पास आएगी , अभाव तुम पर बलशाली की तरह आक्रमण करेगा।

आलसी ! तुम चींटी के पास जाओ ! उसके आचरण पर विचार करो और प्रज्ञ बनो। उसका न तो कोई स्वामी है , न कोई निरीक्षक और न कोई शासक। वह समय पर अपने रसद का प्रबंध करती है और फसल के समय अपना भोजन संचित करती है।

आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है, यह मंजिल को राही से दूर कर देता है। आलस्य त्याग कर आगे बढ़े , बढ़ते रहे ...

॥ दैवीय सम्पदा - क्षमा ॥

मोक्ष प्राप्ति के लिए दैवीय सम्पदा - क्षमा का होना आवश्यक है क्योंकि मोक्ष का विपरीत शब्द लगभग क्षमा होता है। कोई मारे, कोई गाली दे , कोई मासूम और नाजुक दिल भी तोड़ दे फिर भी उसे क्षमा करते चले , आगे बढ़ते चले।

जो क्षमा करता है , वह पूजनीय है। जैसे - एक परमेश्वर।

परमेश्वर या खुदा बड़े - बड़े गुनाहों से तौबा करने वाले के छोटे - छोटे गुनाहों को माफ कर देते है। सोना ,चाँदी , हीरा , मोती नहीं 'क्षमा' महान पुरूषों का आभूषण है।

ईश्वर और ईश्वर - भक्त की नजर में हमेशा बने रहने के लिए अपने हृदय में क्षमा को स्थान दे। क्षमा कहने या क्षमा करने मात्र से बड़े - बड़े झगड़ों को रोका जा सकता है। जो क्षमा करना नहीं जानता , वह बैरी है , अकारण ही बैर को पनपने देता है। क्षमा के प्रभाव से ही व्यक्ति संसार में पूजनीय होता है।

बदला नहीं, बदलाव करे।

II SHIVBHAKTI PURAN II

॥ आधी विपत्तियों का निवारण - धैर्य ॥

धैर्य से मनुष्य की आधी विपत्तियाँ छू - मंतर हो जाती है। सुख - दुःख तो जुआँ है। कभी सुख तो कभी दुःख यह तो लगा रहता है। सुख - दुःख स्थायी नहीं है। स्थायी है तो सिर्फ - धैर्य। जिसके पास धैर्य है , वह मुसीबत में टूटता नहीं , तूफानों में झुकता नहीं , वही बड़े गर्व से अपने पैरों पर खड़ा रहता है।

शैतान के पास धैर्य नहीं होता। धैर्य तो होता है ,भगवान को। धैर्य है - पृथ्वी के पास ,जन्म देने वाली माँ के पास। माँ के कितने ही पुत्र सत्कर्म तो कितने पुत्र दुष्कर्म करते रहते है लेकिन धैर्यवान माँ कभी भी अपने

पुत्रों के बर्ताव के लिए उफ़ तक नहीं करती। ठीक इसी प्रकार पृथ्वी पर भी कुछ अच्छे जन है , कुछ जन अच्छे नहीं है। अन्य जनों को कष्ट भी इनके कारण होता रहता है। फिर भी पृथ्वी अपना धैर्य नहीं छोड़ती , ठीक उसी प्रकार व्यक्ति को भी अपना धैर्य नहीं छोड़ना चाहिए। धैर्यवान व्यक्ति कभी अपना धैर्य नही छोड़ता , वही सुखी है,शान्त है। धैर्य जीवन जीने की कला है।

'' विपत्तिकाले धैर्यम् धारय'' विपत्तिकाल में धैर्य धारण किये रहो।

॥ श्री कृष्णा, चुनार का किला, भारत ॥

समय अच्छा या खराब नहीं होता। हाँ , समय परीक्षा लेता है। जब समय किसी की परीक्षा लेता है ,तो उसके सगे -संबंधी ,रिश्ते - नाते ,यहाँ तक कि एक ही थाली में खाना खाने वाले भी दूर हो जाते है। व्यक्ति का धैर्य छूट जाता है , व्यक्ति अपने - आप से टूट जाता है। कुछ लोग बिखर जाते है तो कुछ लोग निखर जाते है।

धैर्य धारण किये रहे क्योंकि शाम 6 बजे से सुबह 6 बजे तक अंधेरा है तो सुबह 6 बजे से शाम 6 बजे तक प्रकाश भी है। सो अगर जीवन में अंधकार है तो प्रकाश भी है , प्रकाश होने तक धैर्य रखकर कर्म करते रहे। यही जीवन जीने की कला है।

धैर्य रखकर समय की परीक्षा दे, जिसने समय की परीक्षा जीत ली, वह व्यक्ति महान है। वह धैर्यवान है। उसने सुख- दुःख का बेड़ा पार कर मोक्ष के लिए कमर कस ली है। वही मोक्ष अर्थात् परमेश्वर का निवास स्थान जो हमेशा के लिए सुख - दुःख के थपेड़ों से सदा - सदा के लिए निजात दिला देता है।

॥ खुशी एक फूल है ॥

II SHIVBHAKTI PURAN II

खुशियाँ एक फूल है। जिस तरह से फूल खिलने पर उसकी खुशबू बिखरती है ,तो लोगों को आनन्द मिलता है। ठीक उसी प्रकार व्यक्ति के खुश रहने पर उसके आस -पास के व्यक्ति भी खुश हो जाते है। पहले खुशी जरूरी है। खुश रहने से शांति मिलती है। और बाद में समृद्धि भी मिलती है। एक फूल अगर न खिले तो उसकी खुशबू स्वंय में ही समाप्त हो जाती है। उसी तरह व्यक्ति भी अगर खुश नहीं है तो उसकी आत्मा मुरझा जाती है। फूलरूपी आत्मा को मुरझाने नहीं देना चाहिए। फूल को खिलने दे।

फूल खिलने के लिए आवश्यक है -प्रकाश ,जल और हवा की। प्रकाश ज्ञान है , जल अर्थात् आँसू को बाहर न आने दे। ज्ञानरूपी प्रकाश से अपनी आत्मा को प्रकाशित करना चाहिए। और हवा अपने अदंर की साँस यानि अपने अंदर की बुराई को बाहर निकाले। तब मन प्रसन्न रहेगा।

रोता हुआ राही मंजिल तक नहीं पहुँच पाता। एक कदम भी नहीं चल सकता है। और हँसता हुआ इंसान चार कदम दौड़ जाता है।

एक फूल खिलता है तो बगीचे के सभी फूल खिलते है। इसी तरह एक व्यक्ति मुस्कराता है तो पूरा ब्रह्मांड, ईश्वर भी मुस्कराता है , खुश होता है।

साधक को ,राही को ,भक्त को हमेशा प्रसन्न रहना चाहिए। मुस्कराते चेहरे वाले इंसान को देखकर मुकद्दर भी भ्रम में पड़ जाता है और साधक से ,राही से ,शिवभक्त से हार जाता है।

उठो ,चलो ,दौड़ो एक काम कर लो।

आकाश का एक तारा , अपने नाम कर लो।

॥ शिव - शिवा स्तुति ॥

॥ SHIVBHAK... ॥

॥ ओम् नमः शिवाय ओम् नमः शिवायै ॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव । त्वमेव बंधुश्च,सखा त्वमेव ॥

त्वमेव विद्या , द्रविड़ं त्वमेव । त्वमेव सर्वम् मम देव देव ॥

कर्पूरगौरं करुणावतारं , संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।

सदा वसंतम् हृदयारविन्दे , भवं भवानी सहितं नमामि ॥

भवाय भवनाशाय महादेवाय धीमहि । उग्राय उग्रनाशाय शर्वाय शशिमौलिने ॥

देव ! महादेव ! आपकी जय हो । ईश्वर ! महेश्वर ! आपकी जय हो ! सर्वगुणश्रेष्ठ शिव ! आपकी जय हो । सम्पूर्ण देवताओं के स्वामी शंकर ! आपकी जय हो । प्रकृतिरूपिणी कल्याणमयी उमे ! आपकी जय हो । प्रकृति की नायिके ! आपकी जय हो । प्रकृति से दूर रहने वाली देवि ! आपकी जय हो । प्रकृतिसुन्दरि ! आपकी जय हो । अमोघ महामाया और सफल मनोरथ वाले देव ! आपकी जय हो,जय हो । अमोघ महालीला और कभी व्यर्थ न जाने वाले महान बल से युक्त परमेश्वर ! आपकी जय हो ,जय हो । सम्पूर्ण जगत की माता उमे ! आपकी जय हो । विश्व की माता पार्वती आपकी जय हो । विश्वजगद्धात्रि ! आपकी जय हो । समस्त संसार की सखी - सहायिके ! आपकी जय हो । परमेश्वर ! आपका ऐश्वर्य तथा धाम दोनों सनातन है । आपकी जय हो ,जय - जयकार हो । आपका रूप भी आपकी ही भाँति सनातन है । आपकी जय हो , जय हो । अपने तीन रूपों पार्वती ,लक्ष्मी ,सरस्वती द्वारा तीनों लोकों का निर्माण ,पालन और संहार करने वाली देवि !

आपकी जय हो ,जय हो ,जय हो । तीनों लोकों अथवा आत्मा , अन्तरात्मा और परमात्मा - तीनों आत्माओं की नायिके ! आपकी जय हो ।

प्रभु ! जगत् के कारण तत्त्वों का प्रादुर्भाव और विस्तार आपकी कृपा दृष्टि के ही अधीन है , आपकी जय हो । प्रलयकाल में आपकी कटाक्षपूर्ण दृष्टि से जो भयानक आग प्रकट होती है , उसके द्वारा सारा जगत् भस्म हो जाता है , आपकी जय हो ।

देवि ! आपके स्वरूप का ज्ञान देवताओं के लिए भी असम्भव है । आपकी जय हो । आप आत्मतत्त्व के सूक्ष्म ज्ञान से प्रकाशित होती है । आपकी जय हो , जय हो । ईश्वरि ! आपने आत्मा की शक्ति से चराचर जगत् को व्याप्त कर रखा है । आपकी जय हो,जय हो । प्रभु ! विश्व के सभी तत्त्व आपके ही आधार पर स्थित है , आपकी जय हो । आपके भक्तों अर्थात् शिवभक्तों का समूह बड़े - बड़े असुरों के मस्तक पर पाँव रखता है । आपकी जय हो ।

शरणागतों की रक्षा करने में समर्थ परमेश्वरी शिवा आपकी जय हो, जय हो । संसाररूपी विषवृक्ष के उगने वाले अंकुरों का उन्मूलन करने वाली उमे ! आपकी जय हो । ऐश्वर्य ,वीर्य और शौर्य का विस्तार करने वाले देव ! महादेव ! आपकी जय हो ,जय हो । विश्व से भी परे शिव - शंकर महादेव ! आपने अपने वैभव से दूसरों के वैभवों को तिरस्कृत कर दिया है । आपकी जय - जयकार हो । मोक्ष देने वाले ,परम आनन्दमय अमृत की प्राप्ति कराने वाले अमरनाथ ! आपकी जय हो । पंचविध पुरूषार्थ के विज्ञानरूप अमृत से परिपूर्ण स्तोत्रस्वरूपिणी परमेश्वरि ! आपकी जय हो, जय हो, जय हो ।

अत्यन्त भयानक संसाररूपी महारोग को दूर करने वाले वैद्यशिरोमणि ! आपकी जय हो । कर्मदोष एवं अज्ञानरूपी अंधकार को दूर करने वाली चन्द्रिकारूपिणी शिवे ! आपकी जय हो । त्रिपुर का विनाश करने के लिए कालाग्नि - स्वरूप भोलेनाथ ! आपकी जय हो । त्रिपुरभैरवी ! आपकी जय हो । तीनों गुणों से युक्त महेश्वर ! आपकी जय हो । तीनों गुणों का मर्दन करने वाली महेश्वरी ! आपकी जय हो । आदिसर्वज्ञ ! आपकी जय हो । सबको ज्ञान देने वाली महेश्वरी ! आपकी जय हो । प्रचुर दिव्य अंगों से सुशोभित देव , परमेश्वर ! आपकी जय हो , जय हो , जय हो । मनोवांक्षित वस्तु देने वाली माँ शिवा ! आपकी जय हो । परम पिता परमेश्वर ! भगवन ! देव ! कहाँ तो आपका उत्कृष्ट धाम और कहाँ मेरी तुच्छ वाणी , तथापि भक्तिभाव से प्रलाप करते हुए मुझ शिवभक्त के अपराध को आप क्षमा कर दे । मुझे अपने परम धाम में स्थान दे । आर्शिवाद दे...

...शिवभक्त

॥ ओउम् नमः शिवाय ओउम् नमः शिवायै ॥

॥ रिश्वत - एक पाप कर्म ॥

रिश्वत एक पाप कर्म है, अधर्म है । घूस मत लो । क्योंकि घूस अधिकारियों को अंधा बना देती है और निरपराधियों के साथ अन्याय कराती है । अन्याय की सम्पत्ति से लाभ नहीं ,किन्तु धार्मिकता मृत्यु से रक्षा

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II

करती है , बेईमान का आचरण उसके पतन का कारण बनता है। कुछ लोग रिश्वत का आचरण ठीक समझते है ,किन्तु वह अंत में उन्हें मृत्यु की ओर ले जाता है। सदाचारी देश को महान बनाता है , किन्तु रिश्वतखोर राष्ट्रों का कलंक है। पाप की कमाई एकत्र करने वाला अपना घर संकट में डालता है ,किन्तु घूस से घृणा करने वाला जीवित रहेगा।

॥ भारत ॥

रिश्वत देने वाला समझता है कि घूस जादू का पत्थर है। वह जहाँ भी जाता है , सफलता प्राप्त करता है। दुष्ट न्याय को भ्रष्ट करने के लिए छिपकर घूस स्वीकार करता है। झूठा गवाह न्याय की हँसी उड़ाता है। गुप्त रूप से दिया हुआ उपहार कोप को शान्त करता है। कपड़ों में छिपी हुई घूस क्रोध की अग्नि बुझा देती है।

यह शरीर किसकी सम्पत्ति है ?अन्न देकर पालने वाले की है या गर्भादान कराने वाले पिता की ? यह शरीर उसे नौ महीने पेट में रखने वाली माता का है अथवा माता को भी पैदा करने वाले नाना का ? जो बलवान पुरूष बलपूर्वक इससे काम करा लेता है ,उसका है अथवा दाम देकर खरीद लेने वाले का ? चिता की जिस धधकती आग में यह जल जाएगा ,उसका है ? अथवा जो कुत्ते - स्यार इसको चीथ - चीथकर खा जाने की आशा लगाये बैठे है ,उनका ?

यह शरीर एक साधारण - सी वस्तु है। प्रकृति से पैदा होता है और उसी में समा जाता है। तो फिर शरीर पालने के लिए रिश्वत एक घृणित कर्म है। धनी बनने के लिए रिश्वत मत लो। यह विचार अपने मन से निकाल दो। तुम धन पर आँख लगाते हो ,तो वह लुप्त हो जाता है ,क्योंकि उसके पंख निकल जाते है। और वह गरूड़ की तरह आकाश की ओर उड़ जाता है।

प्रभु प्रत्येक के आचरण का निरीक्षण करता है और उसके सभी मार्गो की जाँच करता है। दुष्ट अपने ही कुकर्मो के जाल में फँसता है , वह अपने ही पापों के बंधनों मे बँधता है। वह रिश्वत से मर जाएगा ,उसकी अपनी मूर्खता उसका विनाश कर देगी।

II SHIVBHAKTI MAHAPURAN II

प्यार और ईमानदारी को अपने से अलग न करो। उन्हें अपने गले से बाँध लो , अपने हृदय के पटल पर अंकित कर लो। इस प्रकार तुम ईश्वर और मनुष्यों की दृष्टि में कृपा और सुयश के पात्र बनोगे।

॥ स्वंय का शत्रु - क्रोध ॥

क्रोध आत्मानाशक है। कलह से असह्य क्रोध की उत्पत्ति होती है और क्रोध के समय अपने हित - अहित का बोध नहीं रहता ,अज्ञान छा जाता है। इस अज्ञान से शीघ्र ही मनुष्य की कार्य - अकार्य का निर्णय करने वाली व्यापक चेतनाशक्ति लुप्त हो जाती है। कभी भोजन आदि के समय यदि अपने दाँतों से ही अपनी जीभ कट जाय और उससे पीड़ा होने लगे, तो मनुष्य किस पर क्रोध करेगा ? जैसे आग , आग को जला नहीं सकती और बर्फ , बर्फ को गला नहीं सकता, वैसे ही काल अपने आत्मा को ही सुख - दुःख नहीं पहुँचा सकता। फिर गुस्सा किस पर करे ? गुस्से को प्रभु के चिन्तन और नाम संकीर्तन आदि के द्वारा नष्ट करना चाहिए। क्रोधी व्यक्ति स्वर्ग नहीं जाते है।

क्रोध कल्याणमार्ग का बड़ा ही विरोधी है। क्रोध के वशीभूत हुए पुरूष से सभी लोगों को बड़ा भय होता है, इसलिए जो बुद्धिमान पुरूष ऐसा चाहता है कि मुझसे किसी भी प्राणी को भय ना हो और मुझे भी किसी से भय ना हो , उसे क्रोध के वश में कभी न होना चाहिए।

कामो हि नरकायैव तस्मात् क्रोधोऽभिजायते।

क्रोधाद्भवति सम्मोहो मोहाच्च भ्रंशते तपः ॥

काम नरक की ही प्राप्ति कराने वाला है। काम से क्रोध होता है , क्रोध से मोह होता है और मोह से तपस्या नष्ट होती है।

जो मनुष्य विधाता के बिगाड़े हुए काम को बनाने का विचार करता है, उसका मन अत्यन्त क्रोध में भरकर भयंकर मोह में फँस जाता है।

कामनाओं के त्याग से क्रोध शान्त हो जाता है। क्रोध का कारण अज्ञान है और अहंकार से उसकी वृद्धि होती है। मनुष्य क्रोध तुरन्त करता है लेकिन प्रभु देर से क्रोध करता और अनुकम्पा का धनी है। वह अपराध और विरोध क्षमा करता है। किन्तु वह कोई पाप अनदेखा नहीं करता और पूर्वजों के अपराधों का दण्ड तीसरी - चौथी पीढ़ी तक उनकी सन्तति को देता है।

कोमल उत्तर क्रोध को शान्त करता , किन्तु कटुवचन क्रोध भड़काता है।

मुँहतोड़ जबाब देने में मनुष्य को आनन्द आता है। जितना उचित है, उतने ही शब्द बोलना कितना अच्छा है। झगड़े का प्रारम्भ बाँध की दरार जैसा है , प्रारम्भ होने से पहले झगड़ा बन्द करो।

मूर्ख का होंठ झगड़ा पैदा करता है, उसका मुँह मारपीट को निमंत्रण देता है।

|| SHIVBHAKTT MAHAPURAN ||

क्रोधी का मित्र मत बनो , उग्र व्यक्ति की संगति मत करो । अगर क्रोध आ रहा हो तो चुप रहे , गुस्सा थूक दे , पानी पी ले , कहीं बाहर घूमने चले जाये । मनुष्य बड़ा है , क्रोध बड़ा नहीं है । बुद्धि से , मन से क्रोध को जीत ले क्योंकि आप सब कुछ करने में सक्षम है । यह हमेशा याद रखे कि जो आज मेरा है , कल किसी और का था और कल किसी और का हो जायेगा । यह शरीर और शरीर के सामान , सुख – दुःख आदि सभी नश्वर है । आत्मा ही सत्य है , अपने से अपनी आत्मा का उद्धार करे ।

॥ शिवलिंग ॥

शिवलिंग में शिव जी विद्यमान रहते है । शिवलिंग की पूजा शिव जी की ही पूजा है ।

सबसे पहले शिवलिंग को गंगा जल से धोकर साफ कर ले । फिर दूध, दही, घी, मिश्री का दसवाँ भाग ही शिवलिंग पर चढ़ाये और बाकी का नौ भाग गरीबों, भूखे जनों में बाँट दे । नौ भाग गरीबों, भूखे जनों में बाँटते ही प्रभु शिवलिंग में आ जाते है । शिव जी प्रसन्न हो जाते है । पूजा – सामग्री व भोग – सामग्री का सिर्फ दसवाँ भाग ही शिवलिंग पर चढ़ाना चाहिए । बाकी का नौ भाग तुरन्त ही गरीबों में बाँट दे । जिससे पूजा सफल हो जाती है, अन्यथा पूजा सफल नहीं होती है । इसके बाद जल से शिवलिंग को धोकर साफ कपड़े से शिवलिंग को पोछ दे ।

इसके बाद शिवलिंग पर चंदन से लेप करे । माला – फूल चढ़ाये । बेलपत्र चढ़ाये । धूप दिखाये । रोरी लगाये । जनेऊ दे । शिवलिंग का जनेऊ भक्त अपने को बाद में पहन ले । चावल चढ़ाये लेकिन कटोरे में , पात्र में फिर उस चावल को लेकर गरीबों में, भूखे जनों में बाँट दे । आरती करे । आरती करके हाथ जल से धो ले ।

इसके बाद प्रभु को फल, बेल का रस, खीर, पुआ, मिठाई, ईख का रस, आम आदि का दसवाँ भाग ही प्रभु को प्रसाद के रूप में दे । बाकी का नौ भाग अपने लिए, ब्राह्मण के लिए,गरीबों के लिए, भूखे जनों आदि के लिए तुरन्त दे दे । इससे शिव जी तृप्त हो जाते है । बेलपत्र, प्रभु को अत्यन्त प्रिय है । बेल का रस तो प्रभु को इतना प्रिय है कि आप देते रह जायेंगे लेकिन प्रभु रूकने का नाम नहीं लेंगे । इसके बाद शिव जी को जल देकर मुख की शुद्धि कराये और अन्त में उन्हें खाने के लिए पान, ताम्बुल आदि दे । पूरी पूजा सिर्फ एक ही मंत्र 'ओउम्' से करे । भांग अथवा विजया प्रभु को हर वक्त न दे । इससे उन्हें हमेशा खुशी नहीं मिलती ।

II SHIVBHAKTA MAHAPURAN II

अगर प्रभु को भोग सामग्री फल, दूध, रस आदि और उनके भक्तों, गरीबों,भूखे जनों को नहीं देंगें तो शिव जी कभी प्रसन्न नहीं होंगे। भगवान पहले भक्तों को खुश देखते है तभी स्वंय भी खुश होते है।

अंत में उठकर हाथों में फूल लेकर हाथ जोड़कर प्रभु से प्रार्थना करे , आर्शीवाद मांगे। इस तरह से शिवलिंग अथवा शिव की पूजा शिव धर्म में अनिवार्य है। दिखावा न करे।

जितना दिखावा।

उतना पछतावा॥

॥ प्रभु को न जाने दे ॥

रुक जाना, ठहर जा, ना जा ...

यूं हमसे तू मुंह मोड़ के।

आजा वापस, गले से लगा जा,

प्रार्थना है यह हाथ जोड़कर॥

देख मेरी ओर , मैं चरणों में आया,

वन्दना है यह हाथ जोड़कर।

आजा वापस , गले से लगा जा,

प्रार्थना है यह हाथ जोड़कर॥

छुड़ा दे काम,क्रोध, मोह को तू ,

दे दे मुक्ति यह वन्दना है।

आजा वापस, गले से लगा जा,

प्रार्थना है यह हाथ जोड़कर॥

देने खुशियाँ सभी को तू आजा ,

वन्दना है यह हाथ जोड़ के।

आजा वापस , गले से लगा जा,

प्रार्थना है यह हाथ जोड़कर॥

आजा वापस यह शिवभक्त बुलाये ,

II SHIVBHAKT MAHAPURAN II

ओउम् नमः शिवाय ओउम् नमः शिवायै ।

आजा वापस , गले से लगा जा,

प्रार्थना है यह हाथ जोड़कर ॥

॥ शिवभक्त : संतोष कुमार

रुक जाना, ठहर जा , ना जा ...

यूं हमसे तू मुंह मोड़ के ।

आजा वापस , गले से लगा जा,

प्रार्थना है यह हाथ जोड़कर ॥

॥ ओउम् नमः शिवाय ॥

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II